राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
माध्यमिक पाठ्यक्रम : कर्नाटक संगीत
पाठ 2 : कर्नाटक संगीत की मुख्य धारणायें
कार्यपत्रक - 2

1. मानव कर्णेंद्री के लिये सुनने योग्य नाद की पहचान करें।

2. अधिकतर संगीत शास्त्रियों द्वारा मान्य श्रुति संख्या का उल्लेख करें।

3. उस संगीत शास्त्री की पहचान करें जिसने व्यंकटमखी कीअसंपूर्ण मेल पद्धति में बदलाव किया।

4. उस ग्रंथ की पहचान करें जिसमें राग की अवधारणा को सर्वप्रथम बताया गया है।

5. मूल राग के मेल को कायम रखने वाले रागों की संज्ञा बतायें।

6. भारतीय संगीत के स्वर भिन्न आंदोलन संख्याओं में गाये जाते हैं। इन आंदोलन संख्याओं की सामूहिक संज्ञा बतायें।

7. मानव स्वर और वाद्यों के स्थाई की सीमा क्रमशः स्पष्ट करें।

8. कर्नाटक संगीत की उस ताल पद्धति की पहचान करें जिसे कर्नाटक संगीत के पितामह संत पुरंदर दास द्वारा महत्त्व दिया गया।

9. कर्नाटक संगीत की वर्तमान ताल पद्धति के पूर्व प्रचलित ताल पद्धति का उल्लेख करें।

10. 'श्रुति और स्वर एक सिक्के के दो पहलू हैं'। इस कथन का अपने शब्दों में औचित्य बतायें।